

आम कवचि
2505
ASHA ARCHIVES



श्री सदा श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री

2505

ARCHIVES

५५

१०० नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ पुष्पमलितस्रविष्टे तस्या काधिपनिष्ठतानाः
॥ अमुद्धतपङ्कजाजनीतिममूचय ॥ ॥ तेनाक्यान्त्रधिपनिष्ठतं नानायनस्य
नमस्तुका नया दाव नानासासुपिकास्यतया नाजनीतिमूद्धतया खंजनकाया ॥
अधिगते विभेदसासु ननाहास्यति त्वेवराः ॥ धमा उपदधविलय कार्या कार्य भुल
भुल ॥ ॥ निश्चयनमनूषन धमासु धनेतपं दल्लयलदावधर्मननूधर्मनस्य
यउ उपदधवनेरुयुव कार्यनूकार्य भुल्लभुल्लयुव ॥ ॥ तदहहप्रवक्रातिन
हिकातिनिःयन एहयुवधन जातेवहिनकातिनी ॥ ॥ मनूषयाते हि

मनानऊन कुर्य ॥ मननमनूषन प्रहावेन न धमासु धनेतपं सयासावन
॥ मयासापनहिनयादाय धमासु नहिनयायु ॥ ॥ मल्लहप्रवक्रातिना
नकननुहाधितं जनविहातमावन सवहहहिकायते ॥ ॥ मल्लहप्रवक्रातिना
हवयानके जविहयेन काया ॥ मननमनूषन धमासु सयासावन ग ॥ यपममनन
सुहृतहविषवहमानस्यतं नूधसायुव ॥ ॥ मूर्खनिष्ठापदधन दूसासुह
ने ॥ नचः ॥ विधना सपया ॥ न पधियाय वसिदनि ॥ ॥ मूर्खजातिता उपदधवि
यमनव केवमि उमि वहा मननियक मरतव रूपालविग्रहनेत्यादावभुवसदि

यायमनवश्चमयलकावहनिरुतसनंभवसानेलाकावनिव॥ ॥ मुचिहीसहसं
 पक्कपधितैसहसंकथाःकुलिहीसहसिगत्वंकूर्चनानावसिदति॥ ॥ ७ ॥ पुसगः
 यायकृतगुनिकसूवखकायकृतसूनि कसूवमिगयायकृतकृतवनेकसूवथाप
 याकसूयाकृतवसानवर्नमेरु॥ ॥ ३ ॥ नारुनोहजगनामयपानाचदतिनोमी २
 नाताऊकेलानाचविन्धसतिगतायुष॥ ॥ ४ ॥ कायवधषतविवधषतधनः
 कावकावधषतकिंसिवधषतजाकावधषतमीवधषतधर्तसविन्धसयाः
 तकावधसूयाकृतसुसत्रिलपिरुतपायुव॥ ॥ ५ ॥ विनिनासहविन्धसंजाननेक

तुमि च्छुतिः सवकाणुषू सं ह्यं पतिनपनि वृक्षत ॥ १ ॥ अमनखूपूनूषन ॥
 विस्वास्यानं उमं सिमाचासङ्कदनवयकावचाद्यं सिमानकाता दानतु निङ्क
 दनचायुव ॥ ॥ धनधनपशाणषू विद्यासंगुरुधषूचः ॥ अहर्नवावाहर्नषूत
 कानेकाहदाहर्वतू ॥ ॥ धनसाहासयायसं वाच्छाद्रकारसं वावाहनयायः
 सं धर्तसतसालासर्गमाल ॥ ॥ नगुनूतदसिंमंनानेगुनूतदधीपिताः ॥ य
 स्ताननिमाहाधार्तससात्रादधिदूहलं ॥ १ ॥ अमनषूपूनूषया मापगुनू ववूउनू
 गुनूयादयानदूहसंसात्राहर्तकावसपुउसंनलतपूतंष ॥ ॥ विद्यानूपंनूपा

ना. क्रमात् रूपं तपस्विना का किलाना खनं रूपं पुनित्वना ॥ १० ॥ क्रमवदकाया रूप
 कृतं विशा तपस्वी दकाया रूप कृतं क्रमा. का किलया रूप कृतं खनं. स्त्रीया रूप कृतं
 पुनित्वना रूप ॥ ॥ मातागम सप्तमातीर्थ पिता पूस्कन भव चः ॥ पुनर्कदान सप्त
 तीर्थ. मातागम पून पून ॥ ११ ॥ मनुष्यया मा मरुते. तीर्थगम त्वथ. वदूकृतं
 पूस्कन धीया तीर्थथ. पुनरु सेंक दान धीया तीर्थथ. मा मरुतं रुय रुयंगमः
 तीर्थथ ॥ ॥ नच विशा सप्तमा वधू न च व्याधि सप्तमा त्रिपू. न च पत्न सप्तमा न देवा
 पनं वतं ॥ १२ ॥ सज्जन कृतं विशा वदूकृतं मरुतं व्याधि वदूकृतं मरुतं कृतं काय

३

मरुतं वदूकृतं मरुतं वेनिकृतं विधाना वदूकृतं मरुतं ॥ ॥ विशा पुनित्वना मित्र. कार्य मित्र मरु
 पूचः ॥ क्रमवदकाया रूप कृतं विशा तपस्वी दकाया रूप कृतं क्रमा. का किलया रूप कृतं खनं. स्त्रीया रूप कृतं
 पुनित्वना रूप ॥ ॥ मातागम सप्तमातीर्थ पिता पूस्कन भव चः ॥ पुनर्कदान सप्त
 तीर्थ. मातागम पून पून ॥ ११ ॥ मनुष्यया मा मरुते. तीर्थगम त्वथ. वदूकृतं
 पूस्कन धीया तीर्थथ. पुनरु सेंक दान धीया तीर्थथ. मा मरुतं रुय रुयंगमः
 तीर्थथ ॥ ॥ नच विशा सप्तमा वधू न च व्याधि सप्तमा त्रिपू. न च पत्न सप्तमा न देवा
 पनं वतं ॥ १२ ॥ सज्जन कृतं विशा वदूकृतं मरुतं व्याधि वदूकृतं मरुतं कृतं काय

स्याविशाखलशतुल्यलकातमदयकंदलुयलकावस्त्रीललतकलं न्रआणपूसापलकाव
 धवूललतकलं उग्नवनेमहीनकावधमनाजललतकलं ॥ यत्पूजानविद्यान न
 स्रनानचपछितः न्रधकातकलं नस्र नचचन्द्रावसवनि ॥ १७ ॥ एतसंपूत्रषयाकाय
 नमस्तुगनननकलकावधकूलसचनुमासद्रात्रीथविद्वस्यवनि ॥ ॥ सर्वनिदि ४
 पकेचनु पुलननविदिपके तेलकादिपके धर्म सपूतकूलदिपके ॥ १८ ॥ नात्रीया
 हाचनुमा दिनया एतस्य तेलकायापनाधर्म कूलयापनाकूल सपूतकाय ॥ ॥
 ऊननाचापननाचायसुविद्याप्रयच्छनिः न्रननाताहयकाता पवेतपिननस्रगाः ॥

॥ १९ ॥ यवकनमवि व सं यमपविपातयाक सं यमविशास्य रु सं यमनक सं यवस्य
 सलकायाक सं यका सं ववूषायः ॥ ॥ गुनूपलीना अपली मिगुपलीन येव वं पली
 नानासमानाच पश्चैतमाउल स्रता ॥ २० ॥ गुनूयामीनाकायामी त्वाचयामी यवकी
 यामाम यवमाम यका सं मामधाय ॥ ॥ तातयं पंशुवर्षाधि ३० वर्षाधिगादयः ॥ स
 प्राफषादा न वर्ष पूत मिगुसमाचन ॥ २१ ॥ एतनसूपूत्रषयाकाय कादातास्रसन
 य जिदातातादलपंतय जिमसूदादनाकाव कयव ववूषमिगुहातपंवहलपंमाल
 ॥ ॥ तातयवरुकादातादयवरुवा गुनाः ॥ तस्मापूतधनिषध तादजलं ३ः

लालयन् ॥ २२ ॥ कायमचायमसुखनञ्जयानञ्जनकदावनतादत्तपतलकावञ्जनक
 पुष्पधर्तनथवकायंथरुहनिष्पथरुहतादत्तपतातञ्जयकमर्तव ॥ ॥ नूचिनस्या
 स्यास्यातापुस्याकिंपुयाउन ॥ तांमूहोयदिनस्यातापुस्याकिंपुयाउन ॥ २३ ॥ ग
 नंपूत्रस्याकायविद्यास्यननूचिनमपुमपुतिवङ्गाञ्जयासवूकावववुवङ्गाञ्जयिन ॥
 लञ्जयासवूमदतकावपुस्यावननञ्जपुयाउन ॥ ॥ पूजास्तुविविधेभक्तुनिजाकागत
 तवूधेः निनिहावूधिसंपत्ताहवकिरवत्तपूजिता ॥ २४ ॥ हानिलोकनकायअजत
 पञ्चमुसकायभक्तुसतकावलाकसमस्तस्यनमान्यायु ॥ ॥ प० पूजकिपाल

सपपभरुनवारुकः ॥ प० तपूजितानाजाप० पूजादिनदिन ॥ २५ ॥ चानकजवि
 स्यथवकायहाकाञ्जलासयायमर्तवभक्तुस्यरुनकायभक्तुसतसागाजानपजान
 मान्यायुदिनपनिभक्तुस्यरुधकायधकेभक्तुमर्तवतासतनयाकावूयतातिव
 ॥ ॥ गुणपूजियताउलाकिमाटापेपुयाउनः विक्रियार्कनयथाहिगभवकिनेविवि
 ता ॥ २६ ॥ गुणसययत्तयाकभक्तुतापननञ्जपुयाउनदरुकायमद्रतायंधनकाषायक
 मूलमवाका ॥ ॥ ननस्याहननरूपरूपस्याहननगुनः गुनस्याहननहानहानस्याहननशमा
 ॥ २७ ॥ ननूष्याञ्जहननरुतंरूपरूपयाञ्जहननधरुनगुणगुणयाञ्जहननरुतंहान

हनया आरुनधरुतं क्रमा ॥ गुणपृष्ठ सिमानूपं नीलपृष्ठ नीमा कृतः सिद्धिपृष्ठ हि
 माविद्यालग पृष्ठ सिमा धनं ॥ २८ ॥ नूपमखतय गुधतं रुध्र कृत मखतय निलय रुन वि
 शामखतय सिद्धिय रुन धन मखतय दहं रुक यादृ ॥ २९ ॥ अगुन सखतय नूपं नील सख
 रुतं कृतः सिद्धि च रुना विद्या अलग सखतं धनं ॥ ३० ॥ गुन मखतय काव नूप रं खल रु
 तं नील महीन काव कृत सखं खल रुतं सिद्धि रुत काव विद्या रं खल रुतं दहं रुक मया
 काव धन रं खल रुतं ॥ ३१ ॥ गुन रुषाय नूपं नील रुषाय रुत कृतः सिद्धि रुषाय न विद्या लग
 रुषाय न धनं ॥ ३२ ॥ नूपया आरुनधन गुध गुधया आरुनधरुत नील विद्याया आरुन धय रु

५

तं सिद्धि धनया आरुनधन रुतं दानयाय नय निया ॥ सुकृत आजय कन्या पूरु विद्यापुया
 ऊय नूः य सन आजय रुध्र मित्र धर्म निया ऊय नू ॥ ३३ ॥ कन्या व आजल प रुतं खि
 रुत स काय व आजल प रुत नम रुत नूप रुत नूप रुत मित्र व आजल प रुत
 रुध्र म ॥ ३४ ॥ नात्य च निषत्रा म नू तानि निर्म त सात तं य व हायु साहायानां ना नि
 पात्ता माहाद धिः ॥ ३५ ॥ उपाय सात काव सुभ नूप रं रुत उच म रुत पाता रुत काहा वन
 जिव साग म रुत मुड पात यायं जिव रुध्र नूप न हानि लाक न उआग याय रुध्र रुन मात ॥
 ॥ ३६ ॥ कन च रुत व रुत पाद न का रुत न च ॥ अवेक्ष दिव रुत कन्या रुत ना धय न क

मस्तु ॥ २२ ॥ अस्मिन्दिनपतिः शुकः पूनगमकः वापूनगमकः पादस्मिन्दिनगमकः अस्मिन्दिनगमकः
 तस्मिन्दिनगमकः दानयादिनपतिः अस्मिन्दिनगमकः ॥ २३ ॥ आज्ञानां सह
 आनिर्वर्जपानिपिपीनिकाः ॥ अगच्छेन्नदयापि पदभक्तं न गच्छति ॥ २४ ॥ अस्मिन्दिनगमकः
 वनस्तु संपादिनिनयास्तु अस्मिन्दिनगमकः ॥ २५ ॥ अस्मिन्दिनगमकः
 लस्तु संपादिनिनगमकः ॥ २६ ॥ अस्मिन्दिनगमकः
 वने पर्वतगमकः ॥ २७ ॥ अस्मिन्दिनगमकः
 याय विद्याय न पर्वतगमकः ॥ २८ ॥ अस्मिन्दिनगमकः

[illegible]

कमलस्य पूष्पस्य ललाटे भक्त्या गन्तव्यं तदा ज्ञात्वा तान् देवमवाधं ध्यात्वा मु-
मुक्षुः सदा सन्मत्ताः ॥ निषिद्धं न कर्तव्यं पश्चित्तं भिक्षुः ॥ न चो न ह न नि-
विद्या पश्चित्तं न कर्तव्यं ॥ ३७ ॥ निष्कृमिया व्यापात् लाहा कल मिया व्यापात्
नला स मचाय साधू जन व मित्रयाय सा मु सय क धकाता सून सूर्य भाय मद्र नृक्षय ८
हृत्तुल ॥ ॥ न हि जन्मनि सृष्टत्वे सृष्टत्वे गुण मू च नः ॥ गुणा गुण न न यानि प्रयादधि
च न जन्म ॥ ४० ॥ जन्म न सृष्टव्यं मद्र सृष्टरुतं गुण सत्तमं गुण पति श्रया दाव
गत्पत्तव्यं तदा ३३ धरि स र्धत प्रमानं धरु ॥ ॥ किं कृतं न विभक्तं न गुणवापूजि

माननः ॥ धनू र्ध्वं विष्णुः ॥ निगुनं किं कनिष्ठं ॥ ४१ ॥ हीट कृत रुयान सूर्यया ज-
न सगुन सन मत्पत्तदाव सगुन सन सत्तमं लाकेन मानया युव धनू व सता जाया काय
द्विंथं रुतं निगुनि रुतदाव सूर्यया जन ॥ ॥ किं कृतं न विभक्तं न विद्या दिन रुयान नः ॥ नृ-
कृतिना पि विद्या ॥ ४२ ॥ ॥ गम स पूत्र स हीट कृत रुयान सूर्यया ज-
न विद्या म सत्तदाव भक्तु सत्तसा नृकृति रुत सन गत्पत्तव्यं पूजाया ता नृत्थ पूजाया
युव ॥ ॥ ना मा विव र्ध विद्या या व पात्रं न गच्छति ॥ ३३ ॥ धे च मत्त पात्र नो भया किं प्र-
या जन ॥ ४३ ॥ विद्या रुतं ना म व उध सगुन उपा नयाय मधूना सना मला गत्पत्तव्यं स

मूडपात्रयायधुनकावनामरूपथाजन ॥ ॥ गुनासर्वत्र पूर्यन्ते एतव ॥ निम
 थकावास्तववनमस्तुति वस्तुवनरजना ॥ ४४ ॥ शिखरेनसंगुलस्य पूजायातं ववू
 कायधायमद्रुन ॥ एतकावनात्रायत्वं समस्तस्यन पूजायातं गुलमथ तकावधसव
 वूस्तवचक्रास्यन पूजा मयाके ॥ ॥ गुनाकूर्चतिद्रुतत् ॥ द्रुतपिवसतां सतां ।
 कंतकिगन्धमाश्रयस्वरगा ॥ कृतिषट्पदा ॥ ४५ ॥ गुनवक्तवस्तपचास साधुज
 नवस्तपथरुत् ॥ नायिनशानसनंगत्थकंतकिस्तानयानानरुमत् रुनवनं नृथ
 लीकवनिवा ॥ ॥ विशालचनृपत्तु नहिउत्तपनाक्रमः ॥ स्वदनपूजिता नजा वि

वासवेष्टपुमिसे ॥ ४६ ॥ तत्रावविद्यासालोसडा कं डा लते अयमद्रुता त्रा रुतं थ डा त्रा रुको माने
 यायुष ॥ प्रतनाशसडाको माने मया क विद्यासालोसडा कं डा वनसनतातानं प्रतनावमाने यायु ॥ य
 केनापिसुपुतेन विद्यायेकेनसा दृगा कृतपुद्रवसिदेनचंद्रनेवाप्रकासेते ॥ ४७ ॥ सुफलेयाडा क वि
 व्यावतसा ६ याडा वकुलसप्रद्रवसिदया अग्रगथचंद्रसकिरसथकी ली प्रकासयायफयकंदुका
 यनगाक ॥ ॥ विद्याया नात्रनकुचितकसीदृश्यस्य नात्रन ॥ उद्यो हात्रनकसीकसिगाद्ययत्रन
 ॥ ४८ ॥ गालिदी ॥ विद्यासवदुषसद्र ॥ गालि नला क विद्याससवदुषम ॥ गाल ॥ नमंतिरुतिनोवृ
 क्षानमसिगुनिनात्रा ॥ सुफलका संद्रुवव विद्यातेन वमव्यते ॥ ४९ ॥ सिसवसीमानमेवनमसकान

पा करु गुरु नमः नमः मे वन नमः सका पा कुरु सि थ रुले य नरु म विजल पे के म विरु मरु वला रुदु पे
 का तन म श्री ॥ ॥ न लि क मो नि वला रि सं काल प्र यात्र य ल आता न मे थ न निना त था स्या का य मे
 वर ॥ ५० ॥ थ पे ला क्र मा स नु वत स ला ल त मा त्रा दा त मि थु ने निना त था स्या का य थ प ता स का व ल ल
 म ते व ॥ ॥ आ हा ना त्रा य ले वा जी ग र्हा न क र स्य त्रा य ले त्र त क्षी क स या पा स पा था दा प र व दा य ॥ १०
 ५१ ॥ आ त या के ना ने वा वि त्रा य रा पि व ग र्हा या के ना व क र त्र क मा या रु य । क द व ल सा त दी मा य पा
 थ या का ले नं त्रा य क रु य ॥ ॥ वे द वे दा ग तो ग्रा रु प दो म प ला य न त्रा सि वा द प तो वि ने य र व ता ग्रा पु ने
 दित ॥ ५२ ॥ ग म न ष रा क ने वे द वे दा ग त तो ग्रा रु प दो म पु त्रा य न त्रा सि वा द ~~वे दा~~ ~~मी~~ ~~मं~~ ~~य र व ता~~ ~~य~~
 क र सि व । वि य हा य ता रा स पु तो दित या य ॥ ॥ पा आ नि ग म म दि पा ने दि द्र के न मो वि व ल रु

पुण्यदक्षिणायाहं सर्वरूपीयउत्तमः॥ आयुनी तनुप्रापतं नृषवेष्टविधियतः॥ ७१ ॥ वरुणा
 दिनवेष्टाभक्तुस्तु नृत्वा सयाक नादिह दस्यव चिकीत्सा स्यव हा कतुतुव नितरय हा वहीद
 गुनवक्तु श्वस्तु वेष्टा धारय ॥ ॥ पिडुपिता मरुदका भक्तु हा मिस्त्रा पावकः॥ ७२ ॥ विष्टकथा
 नयेव ७३ ॥ कालपुन स्यत ॥ ७४ ॥ ववू नृजानि स्य विष्टजन भक्तु वक्तु पाक हाद ७५ ॥ विष्टकथा
 नमरुव श्वस्तु सुवाग यायः॥ ॥ सक्तु कर्कट रुना स्य लपूरु हा जिना अतः॥ सर्व भ
 क्तु स माला की चष लष कउ चयन ॥ ७६ ॥ ॥ रूपाल का मउ न नृथ स्य व वा न रुव नृजन
 लिपि हीद नाना भक्तु नृत्वा सयाक श्वस्तु लष क धारयः॥ ॥ ७७ ॥ गिता का लत ना
 हा वन वां पीय उत्तमः॥ नृप मादी सदा दक्षा पुति हा न सउ चयन ॥ ७८ ॥ कार्य या नृन

सा न स्य व व ल व न ला क व उ व उ मा दि म रु व वि च क न ध स पु ति हा न धा य ॥ ॥
 स म स क रु त सा म रु हा प छि तं च जि ता ध मः । धे र्य हो र्य गु ध म प नं स न धा वि धि य नः ॥
 ३१ ॥ रु ली क री स म स सा म रु स व वि च क न प च र्छे न्डी उ य ल प रु व धी र्य व न रु न
 व न ध स म नु धा य ॥ ॥ स म स रु य सा म रु हा वा ह ल षू प ना जि ना । धे र्य वि र्य गु
 ध म प नं नू न्ध धा वि य न ॥ ३२ ॥ स म स रु र्ध सा म रु स व स म वे हा न स न स व
 न वि न रु न व न ध स नू ह न धा य ॥ ॥ म धा वि वा क उ पा हा प रि चि ला प ग क
 क न धि ना य धा क वा दि च ध र्श ना वि धि य न ॥ ३३ ॥ मू ष्ठ र्वा न ही रु व च न प
 रु न न रु नि प त वा ध या क धी र्ज व न रु का उ हा क ध स रु न धा य ॥ ॥ पा थि व स च

रु रु स व दा मि रु न ल क नः । क न स व ध रु ना जा हं धु म नि न धे व चः ॥ ३४ ॥ ना जा व
 उ र्ग व न व रु न ल क न रु दा व ण स उ र्ग व न न ना जा र्दि मा न या न अ स रं धु मि
 या य ॥ ॥ अ न नु व कू ला ला ना द या क र्च ति स ग रु न्ना दि म ध व सानि वू न न या स
 नि वि क्रि या ॥ ३५ ॥ ए स नि श्र य या दा व कू ल व न रु द या व न रु हं धु मि या रु न आ दि
 म ध नू न न रु वि क्रि या स म व रु ॥ ॥ प छि त व रु नो र्ध मूर्ध दा षा नु क व ताः । न
 सा मूर्ध स रु न प्र रु न कं प स स न ॥ ३६ ॥ गु ध स म स रु नि वि च क न स रु य क र्का
 व स म स मूर्ध या क ध र्श न मूर्ध दा त रि ता ल ता न रु नी रु स ल य मा ल ॥ ॥

प्राणनिशास्रपा (धनु संनि नासास्त्रीयागुष्मः यत्तु सगर्गनिवाञ्चय पूरकत्रयसमा
 गम ॥ ३३ ॥ हानिन आउलपाकार्यस नाजा स ह्यतागुनदयु ऊसकीहीदयुप्रउर
 र्गप्राफिरुयु ॥ ॥ पूर्वनी आस्रपा (धनु गुयादावापहिपरः नृयनयथना
 नयनत्रकपतनं कुवं ॥ ३४ ॥ पूर्वयाक आउलपाकार्यस नाजा स ह्यतादावदयु १३
 नृपकिहिहायुलक्ष्मीमायु पत्रगुनत्रकसवनयुव ॥ ॥ तस्माहमिष्टानिर्णयं
 धर्मकापार्थवधयन्तः गुहावननि आस्रक गुहादिनविवजिन ॥ ३५ ॥ धर्तन
 एमनं पूनाजानधर्म नृथकापवृद्धियायन गुनवनसं आउलपमातं गुनदिन

संतातनमात ॥ ॥ यत्किंचित्कृतं ह्ये भुववायदिवाभुतं न संवर्धत ना
 जा स्रुक्तेनेद्रुक्तेते लपि ॥ ३६ ॥ गुनवनसं आउलपान धर्मन भुववायन नृभुववायन
 स्रुक्तेतयायन द्रुक्तेतयायन नाजायातस्त्री वृद्धियायु ॥ ॥ यथाहमपत्रिकृतं तापना
 दनं दनेः तथा पूनृषमपयवं कृतनीलनकर्मना ॥ ३७ ॥ गत्येत्पत्रिकायादाथं नृय
 दायताकदनेः यथा कृतनीलसवन पूनृषपत्रिकायाय ह्यतयपुर्जनं ह्ये वाधवायसना
 गतः नृपत्कातं तथा मित्रं हाषाचविरवक्रय ॥ ३८ ॥ उर्गमवनहितस्य स्रुक्ते स्रुक्ते
 नहितस्य स्रुक्ते स्रुक्ते विपनिह नृपदास मित्रुहितस्य विपनिह स्रुक्ते स्रुक्ते विषयत

दन दान ॥ ॥ हृत्वा वरु विषा मा जान् उरु मा धम मध माः ॥ गनिया गध उ था या गध वि वि
 धव व क र्मा ह ॥ ॥ ॥ उ र्मा व न ही ड म ही ड न न ग मा ल ही ड म ही ड थ य स उ अ ज ल
 प म ही ड म ही ड थ य स उ अ ज ल ॥ ॥ अ ल स मूष तं कृतं न ड व न नि नं न ॥ ॥ अ
 स तु स म र क थ ए उ हृत्वा न त्रा धी प त ॥ ॥ ॥ अ ल नी न्या य य व का धी त र्नी य न नि १४
 ह थ वि का न स तु स म र व थ थ ड म उ र्मा व न त्रा ज स तं ता उ न मा ल ॥ ॥ ए उ हृत्वा मि
 न म हृत्वा म हृत्वा क प न ए उ र्मा क प ना द वि ल व हृ त स म व क त ना स न ॥ ॥ ॥ उ ग म र
 व हृत्वा मि ता उ न मा ल उ ग र त स न क प नि र त क व का र्य या ही ड म ही ड म हृत्वा क व थ

मं त्रा जान ता ल न मा ल ध मं त्रा जा या का र्य ना स र उ ॥ ॥ वा म ह र्था ह त्रा म र्ख पु ष का
 वा ग्री चा न कः ॥ नि हृत्वा वं नू व ग थ ए उ हृत्वा म हृत्वा ॥ ॥ ॥ वि प नि हृत्वा म म न व मी
 र त स न म र्ख का य का या का र्य म या क मा मि ता थ र त ध न ता ल ता न मा हृत्वा ॥ ॥
 न क थि क थ वि मि तु न क थि क थ वि षी यः ॥ का त ना द व ज य र्क मि तु नि त्रि प द क थ
 ॥ ॥ ॥ मि तु द यु का न ना न स र्ज न द यु का न ना न मि तु व स र्ज न व न उ र उ का न धा
 न ॥ ॥ का र्थ थि हृत्वा लो का न न त्रा क प न मा थ तः ॥ व लु की त र्क य द स प नि ए उ
 नि मा त लं ॥ ॥ ॥ का र्य या न् र्थ न लो क न हृत्वा ल प यु ग थ ल व ल स सा सा न र्द न नि

मदतदाव मापत्वदतलं च त्वत्थं ॥ ॥ कृताव सनिना निन्दा नृत्प स्य कृता नतिः । कृ
त सो कृद निन्दा स्य दुर्जन स्य कृतश्रमा ॥ ॥ ॥ वा स न स न न क संया द्रु मद्र एफि
मद्र व संया नं स रय मद्र ना स न संया स्रुष वं मद्र दुर्जन या कृश्रमा वं मद्र ॥ ॥ ॥
वृत्त स्य वना नाजा वा नानां त्रिदि तं वतः । वत पूर्व स्य मून त्वं चो नानां मद्र तं वतः ॥ ॥ ॥
दू वल या व न नाजा वा त स या व त रवाय मूर्ख या व न नान म वाय रू या व त र स रवा द्वायः
॥ ॥ ॥ त ह्ये न स्य कृता मान्य दुर्जन स्य कृतश्रमाः । वा स्या म्निना कृत म्रिहा कृत स एव
का मिना ॥ ॥ ॥ ॥ रू या क मान्य मद्र दुर्जन या कृश्रमा मद्र यन्म म्निना म्रिहा मद्र का मिना

सत्य मद्र ॥ ॥ ॥ नृना थमनां द रिडा नां वा त वृद्धि त प ह्नी नाः । नृन्या य प रिहृ ना नां स
श्रवा पा वि वा ग नि ॥ ॥ ॥ ॥ गति म ध त या द रि ड या वा त र वा स्रुष या त प ह्नी या थ
म या ग नि कृत ना जा त्वं ॥ ॥ ॥ वा धि त स थ दि न स्य नृ म्नि ना नि त स्य चः । दू द य म्नि क द
ग ध स्य स्रु द ड स न मो र व धं ॥ ॥ ॥ ॥ वा धि न पिं द त पं चा द या वि ष य भा स्य चा द या नृ म्नि
त्वा द चा द या दू द य स्रु म्नि क न द रु त पं चा द या थ र या व ष धि स्रु द ड न स्य या व ॥ ॥
नृ म्नि न व न न पु फि दू वि कृ नृ वि गृ हा ना उ द्वा त स्रु म्नि न वा य कि त कि स वा ध वाः ॥
॥ ॥ ॥ वा धि न क स्य चा द या वि प ति व त स्रु न य म द त नृ व का र्य द त दा स्य ना जा स्रु

ददिरुलका संस्थितसविचालयाकसंवेधूषय ॥ ॥ हावसुद्धिमनूषानां हातवसुर्व
 कर्मसुः हाव्येनचुम्बिताकाना हावनदहितानना ॥ ॥ ॥ मनूषयाचरुतसने सि
 द्धिरुल हावमागुनेमीचुम्बलपले स्मचयारहालचुम्बलपले हावनषा ॥ ॥ न
 दवाविशेतेकास्तु पाषाधनचममयतुः हाववूविश्रमदवा तस्माहावामहाह ॥ ॥ ॥
 न ॥ ॥ ॥ लाकसदवमद्रुहि संदवमद्रुचासुंदवमद्रु हावमागुनेदवकुलं थ
 नन्रथनहावसंतव ॥ ॥ निष्पानांदवताचार्य हावमाचार्यदवताः ॥ ॥ दवतायासि
 ताहका वासुधननदवता ॥ ॥ ॥ निष्पयादवगुनू गुनूयादवहाने मीयादव

१४

पूरुषलाकयादवगुमथा ॥ ॥ विप्रपस्ययथावद्विनाचार्यपस्यदवताः ॥ ॥ पृथीपव्यय
 थामाना मित्रुपस्ययथासुता ॥ ॥ ॥ वासुनरुतं नृगिदवताथ गुनूरुतं दवताथ मा
 मरुतं पृथीथं कायरुतं मित्रुथं ॥ ॥ गुनूनृगिद्विजानिनां वर्धना वासुधनगुनूः ॥
 पतिनकागुनूमीनां सर्वस्याहागतागुनू ॥ ॥ ॥ वासुधनरुतं नृगिदवताथ चतुवे
 र्धयागुनूरुतं वासुनल मीयागुनूथवपूरुषलाकयागुनूत्रस्यागता ॥ ॥ ॥ उहमस्या
 पिवर्धुस्य निशापिगुहागता पूजनिशायथानाय सर्वस्याहागतागुनू ॥ ॥ ॥ ॥ उ
 हमजातिरुलसने नीचजातिरुलसने नृस्यागतं वलकावपूजायायमात सुयाः

शिने नृणां गतगू॥ ॥ देवता पूजयत्कृत्वा हृत्वा दानेन पूजयत्॥ ॥ ३ पूजापकात्रेन
 विप्रानां प्रहीवंत न॥ ॥ ४ ॥ देव पूजयत्परावना न उर्गम वन पूजाया यदा मनः पूजय
 जायायथैव उच्यते तन वासुन पूजायाय न प्रह्लाद न॥ ॥ धर्मस्य मूलं राजानां तपस
 त्वं वासुधाः॥ वासुनां अनुपूरकं तनु धर्मस्य नातन॥ ॥ ५ ॥ राजा जाया धर्म मूल २१
 वासुधाया तप मूल वासुन गना पूजाया ता नृना धर्म॥ ॥ आचार्य रूतं धर्म
 र्याचार्य रूतं धने आचार्य रूतं मा प्राप्ति आचार्य रूतं लक्षण॥ ॥ ६ ॥ धर्म रूतं
 यकिं न आचार्य न धर्म रूतं मयैवैवं न आचार्य न रूतं विलं आचार्य न रूतं मयैवैवैव

वा नृणां॥ ॥ हाहाहा जनैः किञ्च नति न किञ्च न मीयः॥ विरुवा दान न किञ्च न
 त्यस्य न पतं रूतं॥ ॥ ७ ॥ नय रूतं मया हा जन नति सा मर्थं यु पन मी या यत प
 यु उच्यते तया दाना निरुयथा कं का धित पन ध रूतं लाय मद्र॥ ॥ वा त्वं वरं वरं
 धर्म ममि त्वय त्वं किं विनः॥ रूतं नाम पि पक्काना नृणां न पतनं रूतं॥ ॥ ८ ॥ वा त्वं
 रधर्म याय मा त्वं नित्यं सान सान नृणां गत्ये त्वं धा त्वं हा द्रि गु स्य पतं त्वं पूथं हा
 स्य मा युव॥ ॥ सद्रु रूतं धर्म को धने वरु नृणां पतः॥ नृद धे वरु नृणां पतः
 मा दन रूतं श्रुतं॥ ॥ ९ ॥ नृद का ति रूतं ला व धर्म रूतं यु को धि रूतं ला व नृणां

यु. इधमरुतलकावहानभायु. प्रमादिमरुतलकावहकाभमभायु॥ ॥ अदिप
 (ग्रेहनाहाम. रुनाहकिनसाशिकाः। उपतिवाहनाकन्यास्वाप्याकक्रियारुताः।
 ॥ **म** ॥ मिमक्रालकावहामवहलरुतल. साशिम. (स्यनया नूनलरुतल. वगिदि
 दाममकास्यवियाकन्याहीद्वगिदिदामकास्यवियाकन्यालरुतल. थवतनून
 पाकयादानेयानूनलरुतल॥ ॥ दानिउवाधिरुषानि. वधेनयननानियः।
 वदातुरुतलमनानि. तस्मादानविजषत॥ **म** ॥ पूर्वजन्मसदस्यनदानमया
 दायारुतलन. नूनवजन्मसदनिउरुयु. वधनस्ययुनूनपनितायु. थवतनमातका

[illegible]

[illegible][illegible]

कपुदानन, सर्वनुष्ठानि जंतवः। न स्मात्तदवस्थानम्, किं वा कनदप्रिउता ॥ १६ ॥ पीय
 वाक् कला ललाटे स मस्तके संतुष्टरुतं श्वेतं न वाक् दप्रिउरुयमवत् ॥ ॥ अग्निदाग्न
 यवेव, सप्तपानिधनापहाः। अगुदाते परात्रे च सगुतं नृत्तनायिना ॥ ॥ मित्रायधक
 रुवसं नृत्तन केयाडरुवसं धनरूययाडरुवसं नृत्तपुलात्रयाययाडरुवसं नृत्तवयाडरु २१
 सां नृत्तवयाडरुवसं पत्रमृत्तयकिरुययाडरुवसं धनरूययाडरुवसं ॥ ॥ नृत्तनाः
 यिनमायानि, मपि वदाने पात्रगः। अद्याह नृत्त अद्याहिया नृत्तन नृत्तपुलाहवता ॥ ॥
 ॥ धनरूना स नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन

संभाचकान नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन ॥ ॥ नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन
 तपत्रहेन्यानि पतिधर्मनपालयत् ॥ ॥ ॥ नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन
 एनेन नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन ॥ ॥ पुष्पां पुष्पां विचित्रिनि
 माता कालवृत्ताहानि यथाजानाति सात्रना ॥ ॥ ॥ नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन
 कृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन ॥ ॥ नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन
 सिने मध्वसु विनायुतः। याने वृक्षनिमन्दात्मा सच सर्वगुनस्यति ॥ ॥ ॥ नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन
 कृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन ॥ ॥ नृत्तपुलाहवता नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन नृत्तन

या कार्यना सरुयु ॥ ॥ अनायवययकृत्वा नूनार्थकतदृशीयः । आहुतसर्वरुकि
व नतः नीयुविनस्यति ॥ ॥ ॥ मनुष्यननूयमस्तस्यवययागदाव त्राजा मद्रुदधम
त्याययतकाव लायसुनिदमनिदनययतकाव धममनुष्य नीयुनेना सरुयुः ॥ ॥
क कालः कानि मिर्हि नि कद्वन कावया गमः । कस्याहं कावमिभके त्रिति विंका मरुमरु ॥ २१
॥ ॥ च्च कालरु निमिर्हि । गमद्वन च्च दूहावव धम मरुच्चन के देवे धविना वातवातं सा
लं ॥ ॥ हि हृद के व कद्वन निष्वचत्वा त्रि कूटः । वायसा पच निष्वत सद्रुधुनीति
गद्वहातु ॥ ॥ ॥ हिं हृया के च्च ता गुन स्यन वाहृतय के च्च ता गुन स्यन स्वाय के पता गुधः

स्यन कावया के दता गुध स्यन रिवाया के रूता गुध स्यन गमधुया के स्यता गुध स्यन सातं
॥ ॥ ॥ पुरुत कार्य मत्वा वा यानत कडु मिर्हि तिः । सदा त्रहं रूतकाय मिहवा के विधीयत
॥ ॥ ॥ च्च कार्य यात स्यन रुतत मया स्य नि कर्षन न पुरुत पन न स्यन हिं हृया के धरा गु
न कायः ॥ ॥ ॥ वृन्दि या नि उग्रं यम्य व के व पधुमान न त्र कार्य कात्रा पपन्नानि सद्य का
या नि साधयतु ॥ ॥ ॥ वाहृत थीरु हानि पूत्रवन स्यव कार्य याय मरुतात पच वृन्दि
निगुरया दवा वरुय स्यव कार्य याय रुतकाव च्च कार्य नयाय ॥ ॥ ॥ पायु रुतन च्च रूदध
सम्बीलाग च्च व मरु मरीयमा कय उग्रित निष्वचत्वा त्रि कूटः ॥ ॥ ॥ स्यथ रीव

लंदन. अथ आधलप. हानिवं भूतलरन. मी आकर्षयाय धपतागुनखायाकस्यनगु
ध॥ ॥ वक्राहियालं संतुष्ट. सुनिउसिधुवतनः। हानिरुर्क. अथ सुनय. अतः सान
मागुध॥ २३॥ दनकावक्राधिकनय. मदनकावचिरायनं संतुष्टय. नीधनदंननी
युनकृतनचायक. हानिरुर्क. अथ सुनय. अथ सुतासिचायाकस्यनगुन॥ ॥ गुरुमे २२
युनध. अथ लंकीचातयसुगुरुः। अथ मादि सुधुर्ह. अथ चनिष्वचवायसा॥ २४॥ मेधु
नसगुधरुयवलसदुकाय. वलसहानिवभूचातलप. पुमादिमरुय. सुधुनरुयधका
नाकाषयाकस्यनगुध॥ ॥ अविअनवरुहात्र. नीताधूचनविदगि। सुहदुहा

हवनिलं. विनिनिष्वचगर्दहान॥ २५॥ अथ मयाकाकार्यमसिधनाल. अथ मवृह
वान. रवाकूकाकस्यरुलप. दकाने संतुष्टय. अथ सुतागभयूयाकस्यनगुध॥ ॥ विन
त्यनागुनापाका. यमुकूयादिचक्रधः। हविष्वतिनिपूतघान्. नअयचहविष्वतिः॥
२६॥ अथ नीयनागुध. सुनानधनलपलं. असंविचक्रन. समसुनरुदकाकृदलपीव
असंअयलपमरुयुव॥ ॥ अथ मूखाअमनूखानां. मस्यसंतफरुतहाः। पनस्यनपका
नन. पूसां हवनिविग्रहः॥ २७॥ मूर्खमरुवहानिलाकननिनर्थवचनदकारुतसभा
चकेयुव. पन. अथ ननूपकात्रयाकानतुनि. साधूजनयाविग्रहदय॥ ॥ अकादनप

थगीवा अचरनी माहार्ध्वः। नृसाधिता विन ह्यनि हे नृधुम्बव पश्चिध ॥ १० ॥ पाठ्या
 गतः पतच्छुगु दियादन हे नृधुम्बजंगल थमवे निरुह्य मातं श्वतन थमवे निरुह्य व
 भायु ॥ ॥ य सननति कुचीन पनक नापि हंरुतिः। जक्रवानन नणपूछः। पूनादा सन
 थीयथा ॥ ॥ ॥ नृपतिया डाव शान दस्यं मयार्क रुजलपान विपतिन तल तर्प मात पू २४
 र्व सृष्टीनाम स्य स्वावं स प बुगन साया क्रिपात जाका व माक द त्या च या डाव विपतिन तल
 पा रुना ॥ ॥ दूह त साग न तीर्थ स मगवान तं वे तं। नृहते पूर्व नाभन स्य रु वं न्ध स
 सागन ॥ ॥ ॥ स मूरु रुत डाव चू कूषा द धका व रुत ना म न व माक उ मातु न सागन

स मुउ सन व ध प डा व श्रीनाम स्य ॥ ॥ यूर सन व य पं च विना ध च प न स्य तः। पने
 ना कु म्य मान पि व य पं पु रु य न न ॥ ॥ ॥ यूरि हित ना जा स्य दू जा धन रु डा रु रु
 ल न त छि स्र रु कि उ उ प नि रु स्र रु कि उ (प) (प) विना ध या द चा डा चू ना धा ल सा म्य
 व न भ व न रु रु क ल स ना रु न ल स न उ प नि रु ना रु न ल स न उ प नि रु स्र रु कि उ स न न व
 य रु रु क ल न त छि स्र व य मा ल धा मा ॥ ॥ ॥ छि रु हा हि रु च र्क मा नि रु रु वा वे न म न्भ न के
 रु त य न न तं या नि यः स्य न प न य व च ॥ ॥ ॥ थ व ए म छि स्र व स्य रु ल पा व ना (प) मा ल
 वे नि रु वा व ना या न सा म न रु रु द ल पं भा च क रु व ए म स्र प न रु ल उ स्र न रु रु या य ॥

॥ चिन्ताकृत्तमनूषानां मन्थनां मेधुनं कृतं ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टां वस्तुनां पातण
कृतं ॥ २५ ॥ मनूषयाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥
याकृतनिहात ॥ ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥
नां ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ २५
नदाव ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥
तः ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥
तमिष्ट ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥ अतो हापाकृत्तमिष्टा ॥

२॥ गमिनिः। चनक नीययानीता नरानंदरुषलाजनाः॥ २७॥ श्रीनामसंस्कृतं नव लक्ष
न सदा लक्ष सदा दत्त नीना सप्तगोहाक धर्मयाक नान धसक तसद्वरु हागीरुत
॥ ॥ के वृष्टिपनामी धर्म कलावासानिनाभ्याः। हनपूर्वाथ संस्कृतं सचकष्टदनि
दता॥ २८॥ मनूष्यायाकष्टमवयान्नादिननवर्हलप थवन्नाभयमधव हवदव
धनलिथे दनिद्रुलदाव धर्मरुतदावकष्ट॥ ॥ अथिनायाधिना मरुव प्रवाशिप
सवकः। जिवतापिष्टनंपच पंचनदुःखहागिनि॥ २९॥ अथीननकष्टलपंआव
सू. वाधिनपिदलपंआवसं. मरुव अष्टानिथरुतं पनगृह सव सलपंआवसं थरुतं

[illegible]

लं कायकृयदनहनं पूरुषमदनदावकी नृधुचिरुलं ॥ ॥ विरुवा सर्वपूषर्न न न
त्रिनानिदहिनः । चाधुनापिन नृधुयस्यानि विपूलं धनं ॥ ॥ ॥ स पुरुष स न ड व
नु पूजाया ता नृनिल पूजाया ता मषू धनं धनं दाव नृधुल कृत सनं उरु मजातिन मा
दलप मात ॥ ॥ धन मा रूप म धन मा धनेः सर्व पुनिष्ठितः । जिव निध निना ला कृ म
ताय त्व धनान न ॥ ॥ ॥ उ व न स म ल ध म द सा ध ल प जिव धन धन धन धन धन धन
दाया स्रुष निध निरुत दाव नि क थं पु या जन म दू ॥ ॥ नृनि संप द मा प ल ह त वः
प न ना रु यः । नृए च नि स नृधं स ल वृज न पा नित ॥ ॥ ॥ नृनि त व संप ति रुत दाव

भाषाहनहयदयुगप्यधालसाउचपर्वनवर्कपातनभाकंथंचुनालिनभायु॥ ॥
 अरुक्षरुक्षकानित्यंकासुखानिचत्रागीना। यस्यरायात्वसंदुष्टाकचनस्यसवग
 रु॥ ४० ॥ निदमनिदननकावत्रागियासुषमद्रु। एमनषूप्रनूषयाफीसंदुष्टम
 रुतकावद्रुयाउच्छासद्रु॥ ॥ सोरिक्ककषकाकानित्यं, सुखनित्यमत्रागीनाः। राया २१
 रुदुवसाकानित्यं, नस्यनित्यसवगद्रु॥ ४१ ॥ निदुदुनत्रागीयात्रायममाल। एमनषूप्र
 नूषयाफीथववसासचानकावद्रुयाउच्छासद्रु॥ ॥ सर्वपत्रंवसंद्रुषसर्वम
 त्रवसंसुखं। एनविद्यासमास्यनलकनसुखद्रुःखया॥ ४२ ॥ अयाहिनपत्रव

सा स चानंदः खरुतं थववसानवहलपूअंयासाहासूष॥ ॥ सुखस्याननं नंदः खं दू
 स्वस्याननं सुखं सुखदुःखमनुष्मानां चकवपनिवेनं ॥ ५० ॥ सुखया नूनं नम
 दुःखं दुःखं सुखं नूनं नम सुखं कृता रणा वा के हलुथ हतिवा ॥ ॥ वदुही मूखं सु
 दानं नूनं नम पनू ही नितेः ॥ आदयं कि गुधम सर्वा नम निवेदि वा कने ॥ ५१ ॥ मूखं
 नाक मूखं चाल गुन हान रव द्वाय हल रुतं ॥ ॥ सुखं ना सुन नाक पूष्य नितं उरु वथं
 हल रुतं ॥ ॥ नूनं ना सुह सग न का न लय धन मागनिः ॥ ॥ प्रयापि सौदि निह र्क स
 द्य मितं वि धियत ॥ ५२ ॥ कूजा नि पूष्य व सग रुत द्वाय उ ह मजा नि म नूष्य रुत सने

केह तिव गये (लोदि निशा रुस सवा डर डरु ल सन ला केन धउ हा ल पू ॥ ॥ नू सं
 स पक दाष न नू ध माया नि सा ध वः ॥ मा (मि) षू ति मि न स्य क स मा पि वि स मा य र ॥ ॥ ॥
 नू सा धू व ना पंचा दा ष न सा धू ऊ न प नि नू ध म रु लं ला स रि व दू न ती क पू ल मा थ
 व द ला स मा थ म वा ल दा या (प) ड उ ॥ ॥ उ र्दे मे स रु स (ग) न का न या ति स मू न ति २८
 ॥ मू वी ल (म) नि धी य नि गु रू ति के स म स रु ॥ ॥ ॥ ॥ ही ड पू नू ष व वा दा दा ष न य था
 ड म नू ष ही ड रु ला ला क सान स या स न ला या थ या स न पा भा ड ब डू या व न व था ॥ ॥
 थ थ ही ड व स ग मा ल ॥ ॥ कि के नि ष ति स प के स्य हा वा डू न ति के मः ॥ प थ म स रु ल म

थ किं क था या ना स तां ग ति ॥ ॥ ॥ ॥ ना पंचा दा व रु क क य स्य हा व रु ल म स थ मा थ स
 रु (म) नू व ना पंचा न स न नू म्ब पू ला के प दू ला ड रु य म स थ स्य हा व रु ल म रु ता ॥
 ॥ स र्क ना व स ग ध न म थ नि म्ब पु ति रि ताः ॥ म धू की न स मा वि षि नि म्ब कि म धू
 ना य र ॥ ॥ ॥ ॥ हा र व ल त ल ला या व नि म्ब पू ड थ स पि या व त य थ या तं ब लि के रि वे
 न डू डू न रु हा ल वि य थ थ न नि म्ब वा कू य क म डि वा ॥ ॥ पू स र्क षू च या वि डा प न रु
 स षू ड ध नः ॥ का र्य काला च स प ली ने हा वि डा न न ध न ॥ ॥ ॥ ॥ पू थि स या स न याः
 वि डा म व या ला हा न स न या ध न का र्य पु था ग रा य व ल स म ला क थ वि डा रु थ ध न ड

गनति समगतः ॥ ३१ ॥ दूतस्मानि मित्रानि निघ्नानि च बाधकाः किं पुथा जनक
 हव्यं मयि नानि ह्येतानि च ॥ ३२ ॥ दूतस्मादपि मित्रं प्रहस्य दूतजनं च पुथा जन
 याय वलसकर्म मद्रुमि ह्येत ॥ ३३ ॥ नृणां वा रुमपूषानि दूतस्मानि च बाधकाः कर्तुं
 चालं हन्युः यत्कालं नापि तिष्ठति ॥ ३४ ॥ वनस्मादपि मित्राणां दूतस्मादपि वं २५
 धूजनं वलसकर्म मद्रुमि ह्येत ॥ ३५ ॥ प्राह वचनं हि न स्य केर्महि न स्यात् न तः नि
 तथैव तेना न स्य ह्येत न्यादु न यायथा ॥ ३६ ॥ प्राह मद्रुम वचनं स्यात् न स्यात् न यायथा
 नि न थ व धि रूतं गत्येत सद्यलतूका ॥ ३७ ॥ कागरुर्द्ध मधिष्ठाय दपलौक तहस्त

थ, चंत्वा नानि ह्येतानि पुरातनं च दं चन ॥ ३८ ॥ च ल सत्याका मधितो कया अ
 र्द्ध मी पूतृष के चाद ह्यथं मद्यजा स्य वृत्तं धपता ह्यनि ह्येत रूतं ॥ ३९ ॥ नि ह्येत ल कपना स्य
 वा नि ह्येत ल गति चा नु न दा व सं रू के नी ल स्य धुनि विपु स्य नि ह्येत ल ॥ ४० ॥ कपनिया क
 स्य वा या का ना गी या क न गि दा रिया क नी ल वा म न न द का प दार्थ धन नि ह्येत रूतं ॥
 ॥ वत य कृत ज्ञा पा ह्य वि नृ प म पि क न का नृ प स्त्री नी न नि चा नु वे वा क न द न कृतं ॥ ४१ ॥
 ह्यनि म न ह्य कृत स जा य ल पू र्क न्या वि नृ पि कृत स न वि वा रु या य मा ल नृ प स्त्री नि रू ल स न नी
 च जा नि म न व थ म व स मा न रु न व ॥ ४२ ॥ विषा दं ध्य म न अ म म न क्ष म पि कां च न नि चो
 द प न मा वि द्या मी न ल दू क ना गी ॥ ४३ ॥ विष स चान स न नृ म न रू ल द व का य जा य नृ

पवित्राय सचान सनं लूकाय माल नीचयार्के रुत सनं उरु मविशारुत रुत सनं माल
 नूकलिरुत सनं मीनलुकाय आ॥ ॥ कस्य दाष कृतनास्ति वाधिने कानपीदिनः
 कनतव सनपाफ प्रियक सनिननन ॥ ३३ ॥ स्याकृत सदाष मंद्र वाधिने सनं सपिद
 लपू सनानद्वय सस्य सपनि सदाठ स्याथ वरु सदाठ ॥ ॥ दाषाप्यस्ति गुनाप्यस्ति नि
 गुधष पिजायन ॥ स्रुमाल सपस्य सनागारु वनि कर्कस ॥ ३४ ॥ दाष मद्रु सन मद्रु गुनरु
 लसन मद्रु सन मद्रु गायधल साका मलपलैयाल सकाथदवथ ॥ ॥ नूतनं निनिर्लवकि नूतनं
 क्षिप्रहाजन नूतन गुन सति हर्षा नूतनं वात रुजिग ॥ ३५ ॥ निनिन काल सनि नूतन शीन दूतन
 नूतन गुन वनि मी नूतन वात सन द्वाय वचन नूतन ॥ ॥ इलहाया रुहि वनि इल रुकुमि

३०

पुत्रः इल रुकु स्रुनानी इल रुवचनं पीय ॥ ३६ ॥ इल रुत सदाठ वचन नूतन वचन
 सनि इल रु रु नि मी इल रु लाकय का तु द्वाया वचन इल रु ॥ ॥ नदीना जा रु वि
 लृष्ट नानि नाच पुति वताः मनुष्या ना नृपाया रु दभन यगु नि वृद्धि ॥ ॥ नदिद
 के सगंगा लृष्ट मिहाद का सपु नि वताहीठ मनुष्य दका सना जा हीठ दनदका सगना
 ना जादता वृद्ध नहीठ ॥ ॥ पूरुं पोतु स माकिर्धु दानिदा स स माकृतः हार्या विनरु
 नं पूंतां यथा न न्यत थगृह ॥ ॥ ॥ काय रुय दन सनं मी मद्रु न द्वाव धया रु स
 उरुत ॥ ॥ सवषां भवत लाना मीया लल मनुर्ह मः रु सान दं थनि चया ता

वलकी धननकि ॥ ११ ॥ सप्त सप्त त्रय दका स श्री त्रय उर्ह स धन न धन वं स श्री उर्ह मरुतं
 ॥ ॥ कृष्णी रुक्मि कुरुगानि कूपू कल हं नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥
 वीरन रुक्मि ॥ १२ ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥
 कलं कृष्णी नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥ कृष्णी रुक्मि नगः ॥
 निमहि पतः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ १३ ॥ निमहि पतः ॥
 १००० गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥ गृह्या नगः ॥
 स्वर्ग सति वनं ॥ स्वर्ग सति वनं ॥ स्वर्ग सति वनं ॥ स्वर्ग सति वनं ॥ स्वर्ग सति वनं ॥ ॥ कवय किं न पश्चि किं न रुक्मि गायताः ॥ ॥

५२
 साकिन कुरुति किं न त्यति मशपा ॥ १४ ॥ कवित्र पंडित पनि सन चूम पाठ का वन चूर
 मन वृत्ति सान चूर कर्म मया कश्चन का वस न चूर धर्म नवा का ॥ ॥ पूरु पुया ऊना
 हाया पूरा पिदं पुया ऊनाः ॥ हित पुया ऊना मित्र सर्व मा संध्या ऊनं ॥ १५ ॥ कायद
 यक यातं श्री पवनं पिशु थय कन काय हित याय न मित्र थव सलिले सहित याय न
 सर्व पुया ऊन दव ॥ ॥ स मुद्रा वन धर्म मि प्रा का ता वन धर्म गृहाः ॥ न न द्या वन धर्म
 दध च विज्ञा वन धर्म मि ॥ १६ ॥ स मुद्रा न द्या वन धर्म मि प्रा का ता वन धर्म गृहाः ॥ न न द्या वन धर्म
 न द्या वन धर्म मि थव च विज्ञा वन धर्म मि ॥ ॥ न गृह्या निन वा धर्म नि न पा का ता वन धर्म गृहाः ॥ न

वधनेव वंशवाऽनितारकृतस्त्रीयः ॥ ११ ॥ अथावायासाकाननलकासाका
 रुद्वंशनयातसां कृतस्त्रीयारुक्थवनीतरुलं ॥ नदिपातयतकृतं नानिपातयत
 धूलं नादीनां च नदिनायं स्वच्छन्दतलितगति ॥ १२ ॥ नदिनथवकृतकातानकलं
 मिहानथवकृतकालं नदियारुलसनं मिहयारुलसनं स्वच्छन्दनचलतपूः ॥ १३ ॥
 लतापास्वस्तिनं वृक्षरुपास्वस्तिनं नृपः पास्वस्त्रपूषायापितृवस्यतिनसंसय
 न् ॥ १४ ॥ मिहामकृतचाडगुषिनहिगयुताऊनथवपाससचाडसमानपू मिहान
 थवपाससचाडसपूषसंगसपयू ॥ नैवपस्यतिजानाधकासाधनेवपस्यति

नपस्यतिमदापली अथीदासनपस्यति ॥ १५ ॥ वायूतिकाननमखाडसाधनखड अ
 रुकालिसूनमखाड अथीनसूनदासमखाड ॥ जीर्णमर्धुयसस्यनं हायावगत
 जीवनः ननुप्रत्यागतसून बन्धचरुहमागत ॥ १६ ॥ किञ्चनवनकेनयाअनहीडः
 स्त्रीरुलसाजीवनवतकावमहीड अतरुलसासंगमसतअतपावववहीड अन
 रुलसाच अथनकावहीड ॥ लक्ष्मीलक्ष्मीनच कृतहिनं सतस्वनिः अपाशंमन
 ननामि मित्रिवर्षतिवासव ॥ १७ ॥ लक्ष्मनमद्रयाकिलक्ष्मीकृतहिनयाकचाडसनस्व
 नि अपाशं सतमलपूस्त्रीधनयावृन्दस्यपचरसवागमचकाथ ॥ यस्यहायावि

तूपाङ्गि कलमनीकलहृषीयः। उहंताहंनवादिवः। अत्रियानत्रियान्रिया॥ ६२॥ अमनंषू
 पूत्रूषयास्मि विनूपीरुयु। अचमलाककचदिया उहंताहंनवानन्याययवः। अथीदस्मी
 स्मीधायन्रसिद्धिः॥ ॥ यस्य हार्या ह्वनूपाचः। उहंताहंनवानन्रुक्तिः। नित्यमधूनलसि
 चः। सिजजाननजनाजना॥ ६३॥ अमनंषू पूत्रूषयास्मी पूत्रूषयालानकावः। द्विथमधुनव
 चनेहुहावः। अथीदस्मीति द्विथमधुनवः॥ ॥ यस्य हार्या गृहनाक्तिः। सुनिवपनि
 गजितः। नंस्वनीदंकीमगुविः। पश्चिनिवहिमागमः॥ ६४॥ अमनंषू यास्मीनद्विथ
 रिवानउका। अथन्याययवः। अथन्याययवः। अथन्याययवः। अथन्याययवः। अथन्याययवः।

निवे॥ ॥ यस्य गृहं पूराया च मातेव हितं कानिनिः॥ वर्द्धनं तस्य गणानि॥ ७३॥ कृपञ्च
यथा॥ ॥ ७४॥ ॥ गमयामास सती न मा मनसा द्या॥ यच्छ्रुत्तु निदानं या युवकला॥ श्वयाधुति
लवृद्धिमानं कृतं॥ धकलाया च नुमाथ॥ ॥ किञ्जाने वरुही पूरु॥ स्वकसं नापका न के
॥ वलभक कृता तवि॥ यश्च विप्रमर्गं कृत॥ ७५॥ ॥ न ल संकाय वा या वच्चाय॥ ॥ अकसं नाप
रुलदास्य॥ संकाय हीट॥ गमय पूरुया केन कृत विप्रम विवस्महीट॥ ॥ ७६॥ कृहाया
यय पूरु॥ ७७॥ रुनिद न॥ धनवः॥ केन्या का ला वमान पि॥ न न या स्य ति विक्रीया॥ ७८॥ ॥ म्नी
रुसं काय स्य स॥ ७९॥ ॥ अति न गुलि दू इच्छा यद वसा जि स॥ लिच्छा स्या च॥ धस्य या विकान नाय

मरु॥ ॥यद्यथावद्वपूजा गयमंकायदिपुञ्जः॥यजतव्याहृते धन नीतवाचः
मस्तु॥ ॥तत्संकायदत्तं कदाचिह्नं संकायगयावानिवृत्ताः धनं न नृत्त
मधजह्याके नीतश्च सा माहादव्याकं दूता रुत रुता॥ ॥उर्केन धृष्टं रुत रुत दत्तं
मानं न वद्विनाः॥ दत्तं न धनं सर्वं कूपुन कृतं यथा॥ ॥॥महिच्छिनवनसग ३४
दक्षिमाच्छाप्तिननव वननपंमिननव यथ कूपुन कायन कृतं भी चकल॥ ॥उर्के
नापि सूपुन पूषितं न सगंधिनाः॥ वंमिनं न धनं सर्वं कूपुन कृतं यथा॥ ॥॥
कृमाहिमासूहाव नाभक गुनपंता सा चकलं कूपुन कायन कृतं यथ हीन

कलं॥ ॥पस्यापूवस्याहृता हार्या च नूगमिनि विहव पूवसं तु हृत्सर्गनस्य
महि नल॥ ॥॥म स्याकायपनि म्नीपनि स्यव कपनि यत्र सा सवद धनन गभक
स्या पृथी सस्वर्गं यं स्रुषा॥ ॥य पूजासुपि तु वस्या सपिताय म्पुषा षकं नं मित्र
यत्र विहसा हार्याय तु यनि र्हि॥ ॥॥म स्रुव वूयाव सा सचाठ पूव वूपा सत पू
काय ध स्रु पूव व मित्रयाय जाण विष्म स्याय जाण ॥॥म स्रु म्नी पूव वूपाव सा सचाठ
ध स्रु म्नी नल॥ ॥य स्य जिवनि जिवनि विप्र मित्र च वान्धवा स रुतं जिवितं तस्य नृ
सार्थकान जिवनि॥ ॥॥म स्रु म्नाटा वाना नात्रा म्म मित्र वान्धव ध स्रु म्नाटा या स रु

नयसा नसगुह दित्यननकसमाक ॥ ॥ कालत्रिपूना सधि कासवमिउ वि
 गुरुः ॥ कार्य कालनमान्तर कालसंक्रान्तिपंथिनु ॥ ॥ वलकालस. नञ्ज्वसधियाय
 मात वलकालसमिउ वविद्य हशायमात कार्य याहृदुधान कालहनपथिनुन ॥ ॥
 कालपचनिरुगानि. कालसंहननपजाः ॥ कालमूर्ध पूयागहि. कालहिदुननिकुमा
 न ॥ ॥ कालनसमस्तु अतिव अतलपू कालनपजा सहाननरुंयु. कालसदन. काल
 सैजागलपञ्चान्. यथीय कालपूलकमतिव ॥ ॥ कालापुर्वनतं नष्टि हृत
 कालापुर्वनतं ॥ कालापुर्वनतहृदि. पूनकालापिसहर्न ॥ ॥ कालवलस

३७

समस्तु अतिव अतलपू कालवलसपू साहाल कालवलस. सप्तसु. कालनहृदियाय. ह
 नकालनमाचकयु ॥ ॥ स्वदि. अहृदिनापच्य चन्द्रार्कननमात्रुतः ॥ सर्वसंहनन
 कालं तस्माकालं नहृद ॥ ॥ ॥ आकास. पृथी. तंय. चन्द्र. सूर्य. मि. हृ. स. धरा. सप्त
 सै कालनमाचकयु. धयार्कनानकालन्रनितवधेय ॥ ॥ किकेतिष्वनिकका
 अतायुनविद्युतः ॥ नगृक्षपत्रकं गुप्तं नजकं किंकटिष्वति ॥ ॥ ॥ अथयसुः
 क्रायावक्रायः ॥ ॥ ददतदवपाचितिवाह रूपनक्यागुप्तस. वमुपमासपतनि
 लिङ्गाय ॥ ॥ कदलिवनपक्षस्त्रयक्रिमन्पत्रकमः ॥ नृविर्वकजनहृन्. गुनवा

नृकिं कनिष्ठाणि ॥ १ ॥ कलितवनसमिव तमलाकथं विचालमद्रुथयसु नवन
 चूतकृतं ॥ ॥ पत्रयाहीर्धमजादाहवतिकितसागमः ॥ सागत्राहदमिच्छति पुन
 थापिनसाधवा ॥ ॥ पत्रयसमुत्तममर्जदमधनपत्रयकेवसाधूजनरुकेया
 सागत्रहृदयवपत्रयकालसः ॥ ॥ भनूचलितकल्यांनमर्जदसागत्रस्ययः ॥ २०
 पुतिपल्लसाहसत्वा नचनतिकदाचन ॥ ॥ कल्यांनसस्तनूपवर्तनचलतप
 समुत्तयिनमरुवसाहूपनूषनरुकेयाविहृदलात्तमचलपूगमलरुतसतन ॥ ॥
 होशरंम्रीषूचपनाविशतवास्तुलेतपः ॥ पानूकविशतनीचदयासाधूषुविशत

॥ ॥ म्रीषूवयचंचलसराववास्तुनयार्कितपदवकाकवचननीचयार्कदयसा
 धूयार्कदयादयु ॥ ॥ साधूसमादसागनहवनिदहविक्रियाः ॥ उपकानसर्तनापि
 दूजनकनगृक्षत ॥ ॥ साधूसमानयादानेथवचलितमियपनागरुवदूजनयार्क
 रुकागतचिन्ताउपकानयादानेसुनानेथवयायमजिव ॥ ॥ वृधवाक्षानिभामु
 निनावृधभामुवाधयतु ॥ पुत्यकपिकर्तद्विषचरुहिनानपस्यति ॥ ॥ हानिलाकसाः
 मुनेवाधयायजिव ॥ हानिभामुनवाधयायमजिव ॥ गत्यधलसापुत्यजनपुनंका
 यकंतलमिषामद्रुनमखाकाथं ॥ ॥ नानिकेनेरुलाकानाहधरकपिसर्जनः ॥

अन्यपि वदता कामा वहि न वा मना न मा ॥ १२ ॥ नात्रिक न थं स र्जन रुयु पिव न महीठ
 दू व न हीठ दूर्जन रु व स वय सिथ पिव न हीठ दू व न क्का क म हीठ ॥ ॥ चं न नं नी
 त लं स लु चं न न न उ च नु मा ॥ चं नं चं न न शा म थ सा धू स र्प के नी त लं ॥ १३ ॥ गी रं नं
 नी त ल च नु मा नी त ल थ न गु ति नी त ल या सि न सा धू उ न या न पा ला य नी त ल ॥ ॥
 न्र ध मा ध न मि च्छु ति पु ति मि च्छु ति म थ मा ॥ उ र्ह मा मा न मि च्छु ति मा ना हि म रु ता ध
 न ॥ १४ ॥ न्र ध म जा ति म नू ष्म न ध न ० ० आ या यु पु ति ० ० आ या यु म थ म र्जन न मा
 न ० ० आ या यु त व न चि वा न ध न ० ० आ या यू ॥ ॥ म क्रि का वर्धु मि च्छु ति ध न मि

३८

च्छु ति पा पि वा ॥ नी चा क ल रु मि च्छु ति सा नि मी च्छु ति सा ध वा ॥ १५ ॥ शा जि नि न यो ल स
 ल य रु यू ना जा या ध न म ल य रु यू नी च जा ति ला य स ल य रु यू सा नि रु यू सा धू उ न द के
 ॥ ॥ ० ० न ना चा थ मि च्छु ति नू प मि च्छु ति दा त्रि का ॥ हा न य कू ल मि च्छु ति स्व र्ग मि च्छु ति ना
 प सा ॥ १६ ॥ ० ० न न र्जन न ध न वा आ या यु द नि ड न नू प वा आ या यु ॥ अ उ द का न कू ल वा
 आ या यु त प ण्डी न स्व र्ग वा आ या यू ॥ ॥ न्र ति कू ॥ न न य ड वा म ति ला र्ह न य स र्व ॥ प न
 पि दा च या द हि ने व सा धू वि श्व र्ग ॥ १७ ॥ न्र ति दू र व न ला य ध न न्र ति ला रु या द स र्व
 ला य न व या र्क पि दा या य थ न सा धू उ न या र्क म दू ॥ ॥ न न क ना न र्ह पा हा च्छु का य

नेवसाधयत् ॥ ह्यस्य कार्य न कुर्याच्च निस्तुतं नेवस्यवयत् ॥ १४ ॥ ह्यनिस्तुतं नेवस्यवयत् ॥
 तिस्रस्तुतं नेवस्यवयत् ॥ अकार्यं मया कच कुर्यात् कार्यं मया कच ॥ अकार्यं मया कच ॥
 मज्जिवा ॥ ॥ जेतुं जेतुं नमानि कच मूकिके कन गऊ गऊ ॥ साधवानरि ह्येव च नन्दनं नेव
 नवर्त ॥ १५ ॥ पर्वतपतिमानि कच मद्र किं हि मापति गऊ भाति मद्र साधुजनसकल
 हीटु मद्र गुपतिं प्रीत्य धु मद्र ॥ ॥ पनकार्यं पूयुकात्सा ह्यकार्यं मद्र साधयत् ॥
 ह्यकार्यं मद्र निवृत्तिं नाऊ कार्यं पूविकु म ॥ २० ॥ निवया कार्यं ह्यकार्यं मद्र कियं कियं मद्र
 यं सप्तथानया कच मद्र मद्र कार्यं सप्तनथानया कच मद्र नाऊ कार्यं सप्तवत्सनाया कच ॥

३५

॥ ऊत्तलसवनि चानि यस्तुतं तन दधनः ॥ अचलं मपि साधूनां नितालसुवति ह
 ति ॥ २१ ॥ नीचया कार्यं तु रव सचायाथं यामुने ह्यय मद्र साधुजनया कार्यं चलत्तप
 मद्र साहा सचायाथं चानि ॥ ॥ मरुतामापदं हकि मरुतामपि संपदः ॥ २२ ॥
 नवमनूष मरुतापदानेव संपद ॥ २३ ॥ नवया आपानव संपदं नव चिवा मरुष
 यार्क आपदानव मद्र संपदं नव मद्र ॥ ॥ संधु मरुष निर्वर्कन वस्तु नवन
 नुजा विषू मरुतामपि मरुताकेल संपद ॥ २४ ॥ मरुतादेव संधु मरुष य मरु
 तनाया कच नवर्वक पनु मरुतामपि नवन विषू संधु मरुष य

हमननायासान तव पूरुष संतुष्टयाय हाथ आजलपान ॥ ॥ लख कपाथ वल्ले
व अचान्य भक्तु चिन्तकाः सर्वव्यसनिना मूख क्रियावन्त च पण्डित ॥ २४ ॥ सा
क सं पद पूरुष भक्तु सवपनि श्वर सप्त सव्य सनिदका मूर्ख क्रियाकर्तृ मया के
क्रियावन्त पण्डित न ॥ ॥ बोहि लख वानि स्रजा ऊह्य वा तपा धनः विना च ४०
त्यानि कूर्चनि कृषि कूर्चनिका तनाः ॥ २५ ॥ वाहात वनि जात ला वनि जात ला
ऊह्य वा तपा वन स्वपना धिने हा निपनि स्यन यायू कात नपनि स्यन श्री सायायू ॥
बुर्ज धना धि वानि स्र विद्या थी च वरु श्रुतः ॥ अतु कात स प त्या थी माना थी नृपति

बुर्ज तू ॥ २६ ॥ धना धिन वनि ऊवा पात यायू विद्या धिन नून क भक्तु स्यनि व पूरु
काय वा स्यायू अतु कात स ग पन यायू मान्य नृ थी ना या के न ना जा स क रूयू ॥ ॥
मूर्ख प स द ना को ना वा वा च न न नी त ली रुदय क ही सं रुर्क गु विधे धू त ल नृ धः
॥ २७ ॥ मूर्ख प त पति थं को त ल नी त ल व च न नी र व धु थं नृ व द क य ति थं थ
स्य ना धू त ल नृ न स्य ॥ ॥ दूर्जन पी य वा दि च नै व विष्णु स का ल य नः ॥ म धू ध्र व नि डि
का गु रु दि हा ना रु त विष ॥ २८ ॥ दूर्जन रूयू उ को रु व च न हा के विष्णु स या य म
न व क सि भ वान हा व थं नृ ग त स हा ना रु त विष थं ची ति च ॥ ॥ र व न स र्ष प

मातुनि पत्रिच्छिडा न पश्यतिः। आत्मना विल मातुनि पन्धनपिन पश्यति॥ २० ॥ इज
 नया भवयाच्छिड चकृति धरुच्छिडने तव धन किं वथ वच्छिड व्यापाय धरुत्त सनख
 रं पश्यत॥ ॥ दुर्बनिया चय मूर्या धन वस्तु धनि गुधः। इतः पिय च दृष्ट्यर्थ किं
 हका वृव पूषिका॥ २० ॥ एतन एतन मूर्या धनि रुतका व गुधिसं न ज्ञात कय
 निगु निरुतका व नारु हिया वृथा॥ ॥ मूर्यापि पत्रिहर्तुवा प्रत्यक्ष दिपद पण्डः। ही
 अत वाक्क स कलं नृदृष्टं केट कायथा॥ २१ ॥ मूर्या ऊनि रुतका व नारु दन मात प्रत्यक्ष न
 पण्ड याहि न पण्ड नन पण्ड वचन कान्ता व कं धन क वृथं व थ वि यु व॥ ॥

४१

सूर्याः कृतं रत्न कृतं सूर्या कृत न कृतं रत्नः। प्रकाश विव सूर्य रत्न कना पश्याम
 न॥ २२ ॥ सूर्या ऊक इज न ऊक सूर्या याहि न इज न अग्नि न ऊक कान धल सा मं नु
 उा धि न सूर्या आयुत या यजि व इज न ऊनि रुका ऊपनि न उप सामा मरुवा॥ ॥
 रुक्मि रुक्म सूर्य प्रन नन रुक्म न वा जिना नृगी नाद न रुक्म न दन त्यागान इज ना
 ॥ २३ ॥ कि नि व दा तच्छि कृपा च क मात नृगं व न तच्छि कृपा च क मात रुद व व जि
 कृपा च क मात इज व रुतका स्यं दन त्याग या दान नु उ वा न द व॥ ॥ रुक्मि न कृत
 रुक्म न कति रुक्म न वा जिना नृगी नाद न रुक्म न रत्न रुक्म न इज ना॥ २४ ॥ कि

शिवं शंकरं सजानं नृपते कल्याणजानं नृगी वलादजाद्या वयानं दुर्जन वरुके खद
 गजाद्या वयानं मातु ॥ २३ ॥ दुर्जन परिहर्तुया गुह्यनालं कृतापि हिः ॥ मनिमातु कृतं
 सूर्य किं न (नोन हया कन) ॥ २४ ॥ दुर्जन रुक्मतादत मातु नमस्तु वरुत सनं मधिन
 हृषलपा वचाय सूर्य ग्वाहा पूथ ॥ ॥ पत्रापातु विषन धनूपल गया यस्थः ॥ ४२
 नानि ध्रुव रश्मि न शीतानि ध्रुव र विषं ॥ २५ ॥ पातु वरु पातु व विषन क्वाहा सा
 व विवथं द्या सन कान दुर्जन वयुव सूर्य दुर्जन कान कान विष वयुव ॥ ॥ २६ ॥ नृपति
 निमत्वा नापकृत कदाचनः ॥ कालं दुर्जन मायानि ॥ २७ ॥ वदति विजयतु ॥ २८ ॥

विद्या नृपहा लपं जाष लप मत्त व ॥ नमस्तु सजितं आवत सवा च द्य सपित याथं वयुव
 व ॥ ॥ षष्टिक कलकं दाष नृपति मधुपिंगलः ॥ नतका धेच वादिच वृद्धा
 नन विद्यतः ॥ २९ ॥ यातु याकं दाष रूयत ३० ॥ शिशु मिराया कच यता ६० ॥ नृपतिः ॥
 कान याकं रवायार्क नत १०० ॥ नृपतिः ॥ धृष्टिया कं नृपति य मजितु ॥ ॥ ३१ ॥
 कृत दुर्जाचा न मेरु ध्रुव पति सजः ॥ विन्ध्यं सप्तमय कार्य विना सप्तपग कृति ॥ ३२ ॥
 सप्त सवाय कपति दुर्जाचा मित्रु हाव ध्रुव त्वद ग मातु कान धातु सा विन्ध्य सया
 दासं कार्य ना सूर्य ॥ ॥ ३३ ॥ नृपति वंदु नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति नृपति

नाकिंविन्, तस्मानिश्चतमाष्ट॥ ४० ॥ नायुनकाउभाचकयूकाकेनायुनभाचकय
नायुनसाधलपमजिवन्ननम३, नायुकाकयाशिनंकाक॥ ॥ वनप्रकृतिनवकि
दरुमूलानि नक्षत्रः॥ समूलममूलं याकि, न्यायमष्टद्वीनलं॥ ४१ ॥ गृहवास्थ
याशिन, हानथावास्थमायू, हारुकेतु, तववालसंषन, हानपंभाचकहवनायु ४३
शीतलन॥ ॥ अत्रनाभावेनिवर्द्धकेन्याचवर्द्धाषितं॥ उषानिचक्षुनिद्रुन
पत्रिवर्द्धयत्॥ ४२ ॥ संपूलाकधसा, रवंवाकेन्या, गभययवह, ध्वनयानसंतादतमा
लं॥ ॥ तहस्यहदमेधुन्य, पत्रदाषानूकिर्हनः॥ कलरुपुननिवेव, दूततपत्रिवर्द्धय

तु॥ ४३ ॥ गुफखपितव, पञ्चनकाके, भवयादाषनकातुआव, त्यायतुयस्यरुव, ध
नयानसंतादतमालं॥ ॥ अन्वयानंगआमर्हः, गभववेवपसूतिकाः॥ तथा अनेपूना
दानी, दूततपत्रिवर्द्धयत्॥ ४४ ॥ अदंनथ, किनिमर्हरुव, नकेवावसा, ध्वनतापा
चकंतादतमालं॥ ॥ दूर्जनंचसदापित्र, पत्रस्यामित्रतामूयः॥ (गभिर्धुवमुजी
ध्वन्य, दूततपत्रिवर्द्धयत्॥ ४५ ॥ दूर्जनवर्हिमित्र, पत्रपूत्रषयाकेनकिमिहा, डि
थासा, डिर्धुववमु, ध्वनतापाचकंतादतमालं॥ ॥ नविन्वसदमित्रुन, मित्रतामि
नविस्वसः॥ कदाचिकूपिनामित्र, सर्वगुं प्रकासयत्॥ ४६ ॥ विनिवर्द्धि विन्वसः

ममवमिगवनिष्कसममवकदाचिहमिगवमयसंनरुतलकावेसमसगुअप
कासयाकयुवा॥ ॥नविन्धसदविन्धसंविन्धस्यनेवविन्धस्याविन्धस्यहयमूय
लेमूलानेवनिदनेति॥ ॥२॥ ॥अविन्धसिस्त्रयाकविन्धसममवमिगवविन्धस
ममवकदाचिहमिगवमयातकावेसमसगुअपकासयायु॥ ॥नदिनाच ४५
नषीनाच ॥गीना ॥मपानिनाविन्धसनेवकह्यमीपूनाउकुलनिच॥ ॥२॥
रूहिबलुसिनाहकवकादववसमुआरुवनाजावधनसवविन्धसयादमम
द्र॥ ॥नदिमित्ररूयावकाजाचनानीनितागुयाः॥साममीमहितानाजानर

वनिचिनायुषा॥ ॥२॥ ॥रूहिस्त्रयाकहिमा ॥अधनमद्रमिहा ॥मनीमद्रनाजाधनतामा
यमद्र॥ ॥यदिऊकास्त्रनिपीनिनीनिननकात्रयनः॥द्रुतमथपकात्रचपन
क्रदात्रउसन॥ ॥३॥ ॥पीनिताउयकयवमनधस्वताकेमियायममवकृतिल्या
यधनवाहात्रयायपूत्रममदसमुडहनयाय॥ ॥नगर्किद्रुविल्लासंनकूर्या
कृतविगुरुः॥आस्त्रापिनथआधमिगवेननकात्रयन॥ ॥४॥ ॥द्रुवविल्लासम
नवतवविगुरुममवथमआधिरुयममवमिगवेनियायममव॥ ॥कूनयः
मनीनाजानाविगुवविषलिपतिः॥प्रुजितननरुहनस्यवनिहकायूषे॥ ॥५॥

कृनिनिनचतसपूमकुयाताजाविषतिपतिवास्तन उतहंगहंन्यासिध्वनस्यवतप
मपवहृनिमृजनन॥ ॥ कृमकुनासि विष्णुसं कृहर्षाया कृणाननिगकृणाक
नासिनिवृहि कृद (ननासिजिवितं) ॥ ५५ ॥ कृमकुयाक विष्णुसं मपव महीद
मृयाकनरमपव कृणाक सुनिवृहि मद्र कृद नन म्माय मद्र ॥ ॥ नासिहस ४५
हृदयोत्र ना (मोचविषमोपतो) मद्र प हृदं नासि मृतकालं उयं नहि ॥ ५६ ॥
मृयाक सस मद्र लवतिनि म्मायादव वास्तनयक (मोच मद्र मरवातयाक सचि
त मद्र कृवातयाक ध्वता मद्र ॥ ॥ दोविषा विष मग्निर च दं पलो गु नू निषया

कृननंनेव गंतव्य निव सवस हसच ॥ ५७ ॥ वास्तन निमृ सया कृननन वास्त
नव कृमि व कृननन मृ पूनूषया कृननन गु नू निषया कृननन म्मायादव
धृता व कृननन ध्व स दथुन वन मरव ॥ ॥ लोकया शा हयं लजा दासिध्वणा
गनितकाः पंचय उन विधर्क न कृया न उ सगति ॥ ५८ ॥ लोकयता कृहय विव ना
ऊनाजातवलागी लुचिनी ल धृता म्माया स मद्र तं उ म्माय नापा लोचक मरव
व ॥ ॥ नाऊनं गु कृताया निवे कृपतिव रु ध्वनः नना निहिन वू धिषां न मूष
सहृमं वन्द ॥ ५९ ॥ कृजतता यु कृयक मद्र चंचल ऊन दं कानम सव मिताऊ

नया वृद्धिस्ति न मरुतु, मूर्खया आयसुत हितकृतकार्यसमाय ॥ ॥ जन (न) सति (न)
 सच, व्याधि (न) सत (ये) वचः। पूनवर्द्धयतयस्य, येस्मात्पुनका नयतु ॥ ॥ ॥ त्रिनि (न)
 स, त्रि (न) स, व्याधि (न) स, धनया (न) सनवाधतपयूव, धननपूतदयेकं मरुतुः ॥ ॥
 उद्धगकेतरुकेषु यूनमश्नुपनमृयति नुमैथुनमातस्य, (न) वरतहि वर्द्धनः ॥ २४
 ॥ ॥ रुतासकेचादचाइतिथ्यपनमृद्विद, मेथुनमृतास, धनस्यवतपवाधतप
 युव ॥ ॥ पनकाजापनस्वच, पतिवानपनस्वचः। पतिहास्यउरूस्मान्, यत्ननपति
 वर्द्धयतु ॥ ॥ ॥ पनया मृपनयाधन, पनयास्व, ततिनपहास्य, धनगुनयनसता

उतमातु ॥ ॥ पनककार्यरुंहा नं, प्रत्यक्षीयवादिनः। वर्द्धयतादसन्ति, विषकुरु
 पुथा मृच ॥ ॥ ॥ पनया मृसकार्यभाचक, कुरुवनथमयको उखा हाके, थथीदमि
 उतादतमात, प्रत्यक्षीयवादिनः। वर्द्धयतादसन्ति, विषकुरु
 कुराया कुरुनदितथाः। कुरुवचकुरायाच, वर्द्धयपश्चि नसदा ॥ ॥ ॥ महीददं
 मृवतिथय, कुरुनिगुम्पि, महीदरवा, महीददव, महीदमृननय, धनपश्चि नप
 नित्यसदादतादतमात ॥ ॥ ॥ उर्वनीयदीनूपन, त्रहायदितिनातमा, (न) पालमि
 निकार्येव, वर्द्धनीयापनमृय ॥ ॥ ॥ ॥ स्वर्गया मृपसता, उर्वनीयता, तिलाहमा

गुरुलकाव. मन्त्री न पूजाहि तेन श्वयया स चं याय मरु गता लक लप रुलं न्नना ह्य
 रुलं ॥ ॥ विधाता लिखिय स ललात कल मालिका देवापि न हि न क्रांति सति सति पून पून
 ॥ १० ॥ विधाता न ललात स च स रुया न्न क त देव न सि (य म्भू य मरु) ॥ ॥ कर्मना हि पुष्प
 न न वूधिना किं पुया ऊनः पाखान स्य कृता वूधि तेन देवा ह विष्मति ॥ ११ ॥ कर्म पुष्पाने ४८
 वूधि (अला वच्चा य ला कया न्न वूधि देव रु स्य वाना ॥ ॥ कर्म न्यपि पुष्पानि नति दे
 पूं रुगुहः वनि स द हल (अपि जान किं रु रागिन ॥ १२ ॥ कर्म हाग पुमाने न
 ही द वला रु रुगु रुया का व वनि स मपिन विया दिन जीता स विवा हा कर्म स

चाकन न्न तेन दू रिवा ॥ ॥ सानू कूल रु व त सि दाषापि गुन स रुतिः गु (अपि दा षताया
 ति वकि रु न विष्म तन ॥ १३ ॥ न्न कूल ही ने का स दाषया ल गु ध क क यु हा ग हि ने रु ल
 का व गु ने न न्न गु ने रु यु ॥ ॥ किं क मा नि न न पा स उ र्ज मा न स्य के र्म हीः पाय ने व म न्न वाना
 वूधि के र्म नू सा नि नि ॥ १४ ॥ रु नि न्न रु नि रु या व रु य क र्म ने रु या थय स म वा स्य म ग क थ
 य उ पा य ने म डि वा ॥ ॥ रु रु स्य रु ष ने दान स स्य के थ स्य रु ष नेः ॥ रु रु च रु ष ने के थ रु ष (ने
 कि पु या ऊ न ॥ १५ ॥ ला हा थ या दान या य न्न लं काल के रु या न्न लं काल स स्य व च क र्म रु रु पा
 न या न्न ल काल ध र्म रु रु न न्न रु रु न न नि या व रु य थ स्य ता म द न रु रु वः ॥ ॥ च नि रुः

याय मासिकेन मासिकेन मिसा धर्द्धरुतं खू सिद्धादन धर्द्धरुतं ॥ ॥ पितृनेकः पूने
दशा मातुदशामाहान संः । एष वृत्तात्म सम दशात् स्वयमव कृषिबुज्जत् ॥ ६२ ॥ ववूर्याकिने
न्नूनपूत्रविय मासयार्किनान्नहान सविय सायार्किनान्नथ दसनविय थमतथ मत कृषिया
तवन् ॥ ॥ कपिलाक्षित्रपाननवाक्काधीगमननचः । वदाशनविचागेन ७ धुरडाननके ५०
बुज्जत् ॥ ६३ ॥ कपिताक्षित्रपानयाठानवाक्काधीगमनयाठान वदाशनविचागेनयाठान
धस्वम् सुड नन के वनिव ॥ ॥ भूडीरुक्तनथा रुके मासभके निनेननः । अिय पानि
हर्व चूडा मृतस्वानश्च आयन ॥ ॥ ॥ भूडीनियालाहावनलक्षिनस्यथादवाक्काधन

उत्पत्त्युत्पन्नविद्यारूपः ॥ नीलहिमाद्रुजानानि, चतुर्दिनंतुल्यजनः। वस्तु
हिनमसंकातं, विद्याहिनादिजालमः ॥ ८५ ॥ नीलहीनमिष्टा, यत्तमद्रुलजनः। वस्तु
यत्तमनियान्तरुतन, विद्यामस्तवजामन, धर्तन्मन्त्रा ॥ ८६ ॥ मन्त्रं मन्त्रं लिखितं
मन्त्रं विषयादिजः। मन्त्रं तपसा रूकं उद्यमं नृपं मन्त्रं ॥ ८७ ॥ लंखया मन्त्रं
पद्मं वाक्मन्त्रं मन्त्रं याकनान् मन्त्रं तप रूकं रूतं वाक्मन्त्रं मन्त्रं, यत्तया मन्त्रं
लंखनं ॥ ८८ ॥ यत्तमस्तव विद्यामन्त्रं, मूर्खा मन्त्रं सवः। पूनूषात्तव च नानिनां, य
या नाचलना सवः ॥ ८९ ॥ वाक्मन्त्रं या उच्चारं रूतं उद्गयाय, मूर्खा या कलहन उच्चारं

मिहाया उच्छ्रुतं पूनूष. साया उच्छ्रुतं न के जावचू लस्यया ॥ ॥ अग्निहोत्रं रुतं वंदं श्री
तद्वर्हि रुतं वंदं. न निपूत्रं रुतं नो गी. दत रुर्क रुतं धन ॥ ॥ ॥ वंदनयाया रुतं अग्निहो
त्रयाय. नमः रुतं नीतही न के. धन दयाया रुतं दानयाय. नयति य ॥ ॥ अग्नि
दहति तापन. सूर्य दहति मल्लिही. न जाजा दहति दं न. तपसा वास. धन दह ॥ ॥ ॥ ५१
अग्नि दहति युतापन. सूर्य न दहति पयुकिनेन. न जाजा न दहति पयु दधुन. वास ध
नपन दहति पयु ॥ ॥ सन सा कष्ट त मां स. कर्म न मयि तं दधि. न र्ज न्या द न काष्ट
च. उल्लापमा स रु अश ॥ ॥ ॥ नानादावा क स नि कला. लाह त न लहिया धति. वा

वा
 लानवाया श्वतः ॥ मास नया वडुत्या ॥ ॥ न रुन्या न मनि दया न रुन्य माना न रुन्य नः ॥
 उय न क्काप नित्य न रुन्य मास यूधि दित ॥ ॥ ॥ ॥ थ मं स्याय मं न व स्या द्वा ह्यय मं न व थ मं न
 क्का ल ल पं स्या च क मं न व श्व स्य ना ल द नान रु न्नि रु धि दित न मां जा लान य न व थ ॥ ॥ न
 मा स रु क्का धे दा षा न म अ न च मे थ न उ वि नित न व रु नानि नि वि र्हि रु मा हा रु लः ॥
 ॥ ॥ ॥ लान या न दा ष म दू श्व ना कान दा ष म दू का म स्य व ल पा न दा ष म दू पा न
 ह्य ला व श्व न नि व र्हि या रु ना द न ल सा मा रु रु ल ला के ॥ ॥ च उ सा ग न उ ज नः
 आ द या ए श्वी वि मि मां न षा र्थ चा पि या मा स तु ल्य मं न दि दू वू धां ॥ ॥ ॥ पिव स

मूडनकावपृथी। एमसंनानदानविद्याव। एमसंपूत्रषनिनामासिरुलंरुतउतिला
 का॥ ॥ अग्निनापक्षीयापूर्वा सूर्यनाजकूतानिचः। नित्यमवपचात्रन सशपानेह
 नानिषत्॥ ॥ ॥ अग्निंलंखं मी। मूरु सूर्य नाजकूतश्चतैर्द्विथंउपचात्रनपानभा
 चकंरुत्॥ ॥ ॥ अग्निंमोसंमोयादृष्टीवाताकैतनूनिदधि। पुहर्तिनेननिन्दा सशपा ५२
 नकनाधिरवत्॥ ॥ ॥ सूर्यतिला डिथीमा सूर्यया सूर्य थनखाधति सूर्य काम
 यादान सूर्यकृत्तवयकानश्चरुतान तन्नपानभाचकंरुत्॥ ॥ सूर्यमासूर्यगं
 श्चवातामूमानहजनः। उष्मादकतत्काया सशपानकनानिषत्॥ ॥ ॥ नकस्या

कालानककायाधित त्यास्यमिता दूद्वेजानयान सिमाकायान कयंक्या दानश्चपूना
 नन्नपानकतत्तु॥ ॥ ॥ अर्नाद दृगुधय दृष्टाद दृगुधपुया पुयाद दृगुनमांसः
 मासद दृगुधयत्॥ ॥ ॥ अर्नयासिनयादगुनमाध माधयासिनयादगुधदूद
 दूदयासिनयादगुनला लायासिनयादगुधयत्॥ ॥ पंचक्रीपुविनस्यनि तवात्तव
 चजायतः। अग्निमानिष्य कामिच गुनद्विषितयेवचः॥ ॥ ॥ अद्वयं नीदुननाम
 रुयु नची लाही अग्निमानकाव कामागु नूद्विषि अद्वयं मथानभायु॥ ॥ ॥ अग्निं
 पुचवेदेच सतिही सत्यवन्दिही। अलवेदाननितेश्च सफहीभर्यममहि॥ ॥ ॥

सादकावाक्यदका वदसत्यवति नृलोहीदानभीतधक्कस्तानपृथीधतलपंनलं॥
 ॥ नृस्तानपि रुतं सति, सनभिवचुष्टकं॥ कास्थावातवता सतागगगहस्तुष्टु
 जनं॥ १००॥ नृस्तानसंस्तानसंस्तानधपता नृक्तवातसा, कासिवात, सूपनूषसंगया
 याय, गगगहंवनशीमाहादवपूजायायधतस्तान॥ ॥ वृत्तिधीदानकस्तान
 सगुरुद्वितियनकेसमाफ॥ ७८॥ ॥ उदृष्टतदसंदृष्टावादृष्टतदसमया
 यदिष्टमसुधवा, समदाधानदियन॥ ॥ समचनधुउरपायधुक्रयानवमीना
 हिनिनकेशनीनिधनवानपूर्ययादा॥ लिपितदेवरुगेयानात्रा॥ ७९॥

५३